International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.newresearchjournal.com/multieducation
Volume 1; Issue 2; April 2016; Page No. 01-04

सिंगरौली जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर आदिवासी शिक्षा के विकास का समीक्षात्क अध्ययन

डॉ. जग प्रसाद वर्मा

विभागाध्यक्ष (शिक्षा), श्री सांई महाविद्यालय, विन्ध्यनगर (बैढ़न) जिला सिंगरौली (म.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र सिंगरौली जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर आदिवासी शिक्षा के विकास का समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित है। शोध पत्र में आदिवासी शिक्षा विकास हेतु सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत आदिवासी समुदाय शिक्षा के प्रति कितना जागरुक है, शिक्षा प्राप्त करने की ओर कितना ध्यान दे रहे है, शासन की नीतियों का सफलतापूर्वक पालन हो रहा है या नहीं, पर विस्तार से अध्ययन किया गया है। आदिवासी समुदाय अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में कामयाब रहा है या नहीं, इसी का का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रयुक्त शब्द : सिंगरौली जिला, उच्च प्राथमिक स्तर, आदिवासी शिक्षा व विकास

प्रस्तावना

शिक्षा के द्वारा स्वामी विवेकानंद ने सामाजिक परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। भारतीय शिक्षा और समाज की दशा पर प्रकाश डालते हुए स्वामी विवेकानंद ने बताया कि थोड़े समय से लोगों ने देश की सम्पूर्ण शिक्षा पर अधिकार कर लिया है। दूसरे शब्दों में, आधुनिक भारतीय शिक्षा में प्रवृत्ति रही है कि इसके द्वारा अभिजात वर्ग तथा सामान्य वर्ग में भेद बना रहे। इसीलिये स्वामी जी ने कहा है– ''यदि हम पुनः उन्नत होना चाहते हैं, तो हम जन समूह में शिक्षा का प्रसार करके ही वैसा हो सकते हैं। निम्न वर्गों के लोगों को उनके खोये हुए व्यक्तित्व का विकास करने के लिये शिक्षा देना ही उनकी एकमात्र सेवा करना है। उनके सामने विचारों को रखो। संसार में उनके चारों ओर क्या हो रहा है, इसकी ओर उनकी आँखें खोल दो और तब वे अपनी मुक्ति का कार्य स्वयं कर लेंगे।''[1]

शिक्षा जहाँ ज्ञान देकर सतत् परिवर्तन करने हेतु उत्तरदायी है, वहीं शिक्षा व्यक्ति को वरदान भी देती है, जिससे व्यक्ति विकास या समय परिवर्तन के कारण हो रहे सामाजिक परिवर्तनों के प्रति अपने आपको उचित समायोजन हेतु तैयार कर सके। यहाँ पर चार्ल्स डार्विन के प्रकृतिवरण सिद्धांत के उस बिन्दु का उल्लेख समाचीन होगा, जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि जीवन के संघर्ष में जीत बलवान की होती है। यहाँ पर बलवान से आशय है ज्ञानी अर्थात् शिक्षित व्यक्ति जिसे संसार में हो रहे अनेक परिवर्तनों, प्रक्रमों का ज्ञान व इसमें समायोजित होने के गुण को विकसित करने की क्षमता है।

शिक्षा के द्वारा विविध प्रकार के समस्याओं का अध्ययन तथा समाधान किया जाता है। शिक्षा के द्वारा भावी नागरिकों में ऐसे ज्ञान अवबोध कौशल तथा अभिवृत्तियों का समावेश किया जाता है जो उन्हें अपने–अपने वैज्ञानिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय दायित्वों को सफलतापूर्वक करने योग्य बना सकते है। वर्तमान समय में शिक्षाप्रदान करने में मुख्यतः दो माध्यम है। परम्परागत माध्यम एवं दूरस्थ माध्यम/परम्परागत शिक्षा प्रणाली में शिक्षक और छात्र आमने सामने बैठकर अध्ययन और अध्यापन का कार्य करते है। इसने शिक्षक उनका समाधान औपचारिक और अनौपचारिक ढंग से करता है साथ ही प्रक्रिया को समझने के ठोस हल देता है।

शोधार्थी द्वारा चयनित शोध क्षेत्र मध्य प्रदेश का सिंगरौली जिला सामाजिक तथा आर्थिक दोनों ही पक्षों में पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। इसके साथ इस जिले की भौगोलिक स्थिति भी समरूप नहीं है। जिले में पर्वत, पठार, जंगल, नदियाँ, दुर्गम स्थल तथा मैदानी क्षेत्र सभी सम्मिलित हैं। इसी कारण यहाँ के निवासियों की जीवन शैली तथा जीवन स्तर पर भी विविधता स्पष्ट परिलक्षित होती है। पर्वतीय पठारों तथा जंगली क्षेत्र की बहुतायत के कारण आदिवासियों की संख्या भी पर्याप्त है। इन वर्गों की अनेक उपजातियाँ भी हैं जिनकी सामाजिक व्यवस्थाएँ तथा मान्यताएँ एक–दूसरे से भिन्न है। देश के साथ ही साथ क्षेत्र विशेष के विकास में इन वर्गों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस वर्ग की आर्थिक स्थिति भी अत्यंत कमजोर है, जो उनके विकास में अवरोधक है।

शिक्षा एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्मजात गुणों का विकास करके उनके व्यक्तित्व को निखारती है और व्यक्ति को उसके कर्तव्यों का ज्ञान कराते हुए उनके विचार एवं व्यवहार मे समाज के लिए हितकर परिवर्तन करती है। व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक शिक्षा की आवश्यकता रहती है। प्रत्येक समय उसका प्रभाव किसी न किसी रूप मे अवश्य विद्यमान रहता है। मानव का अस्तित्व बिना शिक्षा के ''बिना पतवार के नाव'' के समान है। इसकी आवश्यकता प्रत्येक प्राणियों की आन्तरिक शक्तियों को समझनें एवं अन्तर्निहित षक्तियों के समुचित विकास करने में प्रमुखतया रहती है जिससे वह कल्पना तर्क अथवा जिज्ञासा द्वारा नवीन योगदान दे सके।

स्वतंत्रता के पूर्व तथा स्वतंत्रता के पश्चात् पहले दशक तक हमारे देश में शिक्षा की स्थिति अत्यंत निराशाजनक थी। स्वतंत्रता के समय मात्र 18 प्रतिशत लोग ही शिक्षित थे उसमे भी बालिका शिक्षा की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। इसका प्रमाण देते हुए डॉ. श्रीधरनाथ मुखोपाध्याय ने लिखा है कि ''प्राथमिक शिक्षा की स्थिति संतोषप्रद नहीं थी। सन् 1947 मे सिर्फ 10–11 आयु वर्ग के एक चौथाई बालक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे थे।''

शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण एवं सर्वसुलभ बनाने, समाज के अंतिम छोर तक इसके विस्तार करने और उसे सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु भारत सरकार के संकल्प से प्रदेशों मे सर्वशिक्षा अभियान लागू किया गया है। राज्य सरकारों और स्थानीय स्वशासनों के भागीदारी से शुरू किये गये इस कार्यक्रम का उद्देश्य 2010 तक 6–14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है।

सिंगरौली जिले में आदिवासियों की बहुलता है। जिले में रह रहे सामान्य जाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के लोगों की तुलना में आदिवासियों की साक्षरता काफी कम है। इन वर्ग विशेष की पुरुष व महिला दोनों की शैक्षिक स्थिति दयनीय है। इनके महिला वर्ग की शैक्षिक स्थिति तो अत्यंत दयनीय है। ऐसी स्थिति में इन्हें पूर्ण

शिक्षित कर समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये जो शासन का लक्ष्य है, उसे प्राप्त करना दुष्कर प्रतीत होता है।

प्रस्तुत शोध पत्र सिंगरौली जिले में उच्च प्राथमिक शिक्षा स्तर पर आदिवासी शिक्षा विकास पर सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत आदिवासी समुदाय शिक्षा के प्रति कितना आकर्षित एवं जागृत हुआ है और शिक्षा प्राप्त करने की ओर कितना ध्यान दे रहा है शासन की शिक्षा नीतियों का सफलता पूर्वक पालन कर रहा है या नहीं? इस शोध पत्र का यह प्रमुख उद्देश्य है। शिक्षा मानव के चहुमुखी विकास का आधार स्तंभ है। संविधान में निर्धारित है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर 14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा उपब्ध कराई जावे इसका प्रमुख उद्देश्य सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से इन पिछड़े वर्ग को शिक्षा देकर अन्य वर्ग के बराबरी पर लाना है।

शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दावली का परिभाषीकरण

1. **सिंगरौली जिला–** मध्यप्रदेश राजस्व के विभाजित जिलों में से एक जिला है जो 03 विकासखण्डों में विभाजित है जो निम्न है– बैढ़न, चितरंगी और देवसर।
2. **उच्च प्राथमिक स्तर –** मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित कक्षा 6 से 8 तक।
3. **आदिवासी क्षेत्र –** सिंगरौली जिले में आदिवासी क्षेत्र में संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय।
4. **विकास –** विकास से तात्पर्य है उच्च प्राथमिक स्तर पर शासन द्वारा उपलब्ध विभिन्न योजनाओं का लाभ छात्रों को मिल रहा है कि जानकारी प्राप्त करना।
5. **समीक्षात्मक अध्ययन –** शोध के अन्तर्गत न्यादर्श हेतु चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत आदिवासी क्षेत्रों के उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों को विभिन्न योजनाओं के लाभ का समीक्षात्मक अध्ययन करना है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. सिंगरौली जिले में आदिवासी क्षेत्रों के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में आदिवासी बच्चों को उच्च प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने की गति का अध्ययन करना।
2. सिंगरौली जिले में आदिवासी क्षेत्रों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की शैक्षणिक सुविधाओं का उचित उपयोग न करने का व उचित लाभ न उठाने के कारणों का अध्ययन करना।
3. शिक्षा अध्ययन में रुचि न लेना शाला से पलायन करना अथवा गैरहाजिर रहना।
4. शालाओं में क्रीड़ा प्रतियोगिता या खेल को महत्व न देना।

शोध परिकल्पना

शैक्षिक अनुसंधान में समस्या चयन के बाद परिकल्पनाओं की रचना शोध प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। परिकल्पना से समस्या समाधान को उचित दिशा निर्धारित होती हैं परिकल्पनाओं द्वारा अनुसंधानकर्ता को तर्क संगत आंकड़ों के संकलन में ठीक दिशा मिलती है। भौतिक विज्ञानों में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार हैः–

1. "सिंगरौली जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव है।"

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र जिला सिंगरौली है। इसके अन्तर्गत 3 विकासखण्ड – बैढ़न, चितरंगी और देवसर हैं।

न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है जो निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक 1: न्यादर्श चयन

क्र.	विकासखण्ड	विद्यालय संख्या	षिक्षक संख्या	प्रधानाध्यापक	अभिभावक संख्या	छात्र संख्या
1.	वैढ़न	10	20	10	20	100
2.	चितरंगी	10	20	10	20	100
3.	देवसर	10	20	10	20	100
योग		30	60	30	60	300

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है जिले के सभी विकासखण्डों से 10–10 विद्यालय कुल 30 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया जाएगा। शोध कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 60 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक/जनशिक्षक, 2–2 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 05 बालक व 05 बालिका, कुल 300 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

1 सर्वेक्षण अध्ययन विधि

सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

2 साक्षात्कार विधि

शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।

3 साख्यिकीय विधि

सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेशण हेतु, सांख्यकीय विधियाँ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये–

Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, 'T' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से शर्मा (2007)[2], मंगल (2005)[3], पाठक (20013)[4], गुप्ता (1997)[5], भोलेराव (2015)[6], त्रिपाठी (2007)[7] एवं प्रसाद गोमती (2009)[8] ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

शोध उपकरण

स्वनिर्मित प्रष्नावली द्वारा शिक्षक, प्रधानाध्यापक, अभिभावक व छात्रों से साक्षात्कार व प्रश्नावली के माध्यम से ज्ञात किया गया है।

शोध क्षेत्र का परिचय

सिंगरौली जिला रीवा जिले के पूर्व में स्थित है यह 22°,47″,5′ व 24°, 42″,10′ उत्तरी अक्षांश एवं 81°18″40′ व 82°,48″30′ पूर्वी देशान्तर के मध्य फैला हुआ है। सिंगरौली जिला उत्तर में उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिला पूर्व में छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिला एवं दक्षिण एवं पश्चिम में सीधी जिले से घिरा हुआ है। सिंगरौली जिला एक नवनिर्मित मध्यप्रदेश का जिला है। यह 24 मई 2008 को अस्तित्व में आया। इसका मुख्यालय बैढ़न में है सिंगरौली में तीन तहसीले है, सिंगरौली, देवसर और चितरंगी इसके तीन विकासखण्ड वैसे ही है। तथा वर्तमान में 01 अप्रैल 2012 से दो नवीन तहसील माड़ा एवं सरई का सृजन हो चुका है। जिससे सिंगरौली जिले अन्तर्गत कुल 5 तहसील है। सिंगरौली कस्बा एक नगर पालिका निगम जिसकी जनसंख्या लगभग 2.25 लाख है। सिंगरौली जिले की जनसंख्या लगभग 11.78 लाख है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक 2: उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का			
			अभाव है		अभाव नही है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	30	26	86.67	04	13.33
2.	शिक्षक	60	49	81.67	11	18.33
3.	अभिभावक	60	46	76.67	14	23.33
4.	छात्र	300	236	78.67	64	21.33
योग		450	357	79.33	93	20.67

स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 83.33 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 76. 67 प्रतिशत शिक्षक, 61.67 प्रतिशत अभिभावक व 76.17 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव है और शोध क्षेत्र के 38.33 प्रतिशत अभिभावक व 23.83 प्रतिशत छात्र, 23.33 प्रतिशत शिक्षक व 16.67 प्रतिशत प्राचार्य यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव नही है।

सांख्यिकीय विष्लेशण
काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	अभाव है	अभाव नही है
F_o	79.33	20.67
F_e	50.00	50.00
F_o-F_e	29.33	-29.33
$(F_o$-$F_e)^2$	860.25	860.25
$\frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$	17.20	17.20

$$x^2 = \sum \frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$$

$x^2 = 34.40$

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। गणना द्वारा x^2 का मान 34.40 है, जबकि तालिकामान 1df पर तथा 0.05 व 0.01 level पर 3.84 व 6.63 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि सिंगरौली जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव है।

संदर्भ

1. मासिक छात्र युवा (स्वामी विवकानंद की शिक्षा दर्शन), भारतीय शिक्षा पद्धति विशेषांक, अंक 5 नवम्बर–1999
2. शर्मा, राजकुमारी, श्रीवास्तव एस.बी.एन., दुबे, एस.के. (2007)–भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें। राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
3. मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा (2005) – विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायल बुक डिपो.

4. पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. (2013) – अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
5. गुप्ता, एस.पी. (1997) : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.
6. भालेराव, चन्द्रकान्ता एवं श्रीवास्तव, आशा (2015) – माध्यमिक स्तर पर मध्यप्रदेश में आदिवासी शिक्षा का विकास, रिसर्च लिंक, 135 Vol. XIV(4), pp. 117-118.
7. त्रिपाठी रेणु एवं त्रिपाठी, अर्पणा (2007), भारत में प्राथमिक शिक्षा, प्रथम संस्करण, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
8. प्रसाद, गोमती (2009), रीवा संभाग की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. शिक्षा, अ.प्र.सिंह वि.वि., रीवा.